APRIL 2014 TO MARCH 2015

दैनिक भास्कर

राजनांदगांव . शनिवार 5 जुलाई, 2014

बोनी में अच्छे किस्म के बीजों का उपयोग करे : डॉ. त्रिपाठी

कवर्धा। खरीफ फसल के तहत जिले में धान एवं सोयाबीन की खेती बहुतायत की जाती है। कृषि विज्ञान केंद्र के पौध रोग विशेषज्ञ डॉ. बीपी त्रिपाठी ने बताया कि धान व सोयाबीन के फसलों में विभिन्न रोगों को देखते हुए, कृषकों को समन्वित रोग प्रबंधन के बिंदुओं पर जोर देना चाहिए। इसके लिए किसानों को अपने खेतों की गहरी जुताई गर्मी के दिनों में करनी चाहिए। इससे परजीवी की संख्या कम होगी। कृषकों को अच्छे किस्म के बीजों का चयन कर बीजोपचार पर विशेष ध्यान देना चाहिए। श्री त्रिपाठी ने कहा कि जिस प्रकार बच्चों का टीकाकरण जरूरी है। ठीक उसी प्रकार फसलों के बुआई के पूर्व बीजोपचार करना भी महत्वपूर्ण है। बीज उपचार करने के लिए फंफूदी नाशक, कार्बेन्डाजीम, मैंकोजेब 3 ग्राम प्रति किलो बीज की दर से उपचारित किया जा सकता है।

हरिभूमि 15

रायपुर, शुक्रवार, 22 अगस्त 2014

कवर्धा

कृषि विज्ञान केन्द्र ने कृषकों को दिया प्रशिक्षण

हरिभूमि न्यूज. कवर्धा

नवभारत

रायपुर, शुक्रवार, 04 जुलाई 2014

वर्षा की अनिश्चितता की स्थिति में खरीफ में स्प्रिंकलर सिंचाई लाभदायक

बीज अंकुरण एवं पौधों के बचाव हेतु स्प्रिंकलर सिंचाई करें

कृषि वैज्ञानिकों ने उत्पादन बढ़ाने की तकनीक बतायी

कृषि वैज्ञानिकों के साथ कृषक.

सलाह | वर्षा की अनिश्चितता को देखते हुए जिले के किसानों को खरीफ फसल की सिंचाई के लिए दी गई सलाह।

स्प्रिंकलर सिंचाई लाभदायक

हरिभूमि न्यूज. कवर्धा

बोनी पूर्व बीजोपचार जरूरी

कवर्धा। सोयाबीन एवं धान का बीजोपचार का महत्व बताते हुए कृषि विज्ञान केन्द्र कवर्धा में पदस्थ पौध रोग विशेषज्ञ डॉ. बीपी त्रिपाठी ने बताया कि खरीफ में कबीरधाम जिले में सोयाबीन और धान की खेती बहुतायात की जाती है। जिसमें धान में झुलसा, शीथ ब्लाइट, शीथ राट, कंडुवा आदि प्रमुख बीमारी एवं सोयाबीन में चारकोल राट, सोयाबीन ब्लाइट आदि बिमारियों के कारण किसानों को सही उत्पादन नही मिलता साथ में बहुत सारी कृषि दवाइयों का उपयोग करना पड़ता है। अतः किसान भाइयों को समन्वित रोग प्रबंधन के बिंदुओं को जोर देना चाहिए जैसे कि किसान भाई अभी गर्मी में गहरी जुताई जरूर करें जिससे रोग पर जीवी की संख्या कम होगी। अच्छे किस्म के बीजों का चयन करें। साथ में बीजोपचार आवश्यक रूप से करें जिस प्रकार बच्चे पूरे उम्र स्वस्थ रहने के लिए टीकाकरण जरूरी है उसी प्रकार फसल को बुआई के पूर्व बीज उपचार करना उतना ही महत्वपूर्ण है। बीज उपचार करने के लिए बाजार में उपस्थित फफूंदीनाशक जैसे कार्बेन्डाजीम व मैंकोजेब 3 ग्राम प्रति किलो बीज की दर से उपचारित करें अथवा ट्राइकोडर्मा 2 ग्राम/किलो बीज से उपचारित करें जिससे बीज जनित बिमारियां आने की संभावनाएं कम हो जाती है। धान की रोपा पद्धति के लिए थरहा नर्सरी लगाने के पूर्व बीज उपचार करें। इसके साथ साथ खेत की साफ सफाई करें। धान अथवा दलहनी फसलें जैसे अरहर, उड़द, तिलहनी फसलें, सोयाबीन एवं मूंगफली इन सभी फसलों में बीज उपचार अवश्य करें और फसलों में बीमारी आने के पूर्व उसकी रोकथाम की अधिक जानकारी हेतु कृषि विज्ञान केन्द्र, कवर्धा में संपर्क करें।

कवर्धा | हरिभूमि

किसानो को दी गई सलाह

कवर्धा। कृषि विज्ञान केन्द्र कवर्धा में पदस्थ पौध रोग विशेषज्ञ डॉ. बीपी त्रिपाठी ने जिले के किसानों को सलाह देखते हुए बताया कि खरीफ में कबीरधाम जिले में सोयाबीन और धान की खेती बहुतायात में की जाती है। जिसम धान में झुलसा, शीथ ब्लाइट, शीथ राट, कंडुवा आदि प्रमुख बीमारी एवं सोयाबीन में चारकोल राट, सोयाबीन ब्लाइट आदि बिमारियों के कारण किसानो को सही उत्पादन नही मिलता साथ में बहुत सी कृषि दवाइयों का उपयोग करना पड़ता है। अतः किसान भाइयों को समन्वित रोग प्रबंधन के बिंदुओं को जोर देना चाहिए। श्री त्रिपाठी ने बताया कि किसान भाई अभी गर्मी में गहरी जुताई जरूर करें जिससे रोग परजीवी की संख्या कम होगी। अच्छे किस्म के बीजों का चयन करें। साथ में बीजोपचार आवश्यक रूप से करें। उन्होंने बताया कि जिस प्रकार बच्चों को तउम्र स्वस्थ रखने के लिए टीकारण जरूरी है उसी प्रकार फसल की बुआई के पूर्व बीज उपचार करना उतना ही महत्वपूर्ण है। बीज उपचार करने के लिए बाजार में उपलब्ध फंफूदीनाशक का उपयोग किया जा सकता है।

APRIL 2014 TO MARCH 2015

कवर्धा हरिभूमि 1
रायपुर, रविवार , 03 अगस्त 2014

रोगों से निपटने दी गई सलाह

कवर्धा। कृषि विज्ञान केन्द्र कवर्धा में पदस्थ कृषि वैज्ञानिकों के दल ने किसानों के खेतों में भ्रमण कर समसामयिक सलाह किसानों को दी। केन्द्र में पदस्थ मृदा वैज्ञानिक व कार्यक्रम समन्वयक डॉ. टीडी साहू ने किसानों को उचित उर्वरक प्रबंधन व पोषक तत्व प्रबंधन के बारे में बताया जैसे कि इस समय लगातार बारिश से धान में यदि पीलापन दिखाई देता है तो जिंक सल्फेट का छिड़काव करें। इसके साथ ही धान में पोटाश का उपयोग करें। क्योंकि लगातार बारिश से पौधे कमजोर हो गए हैं। पोटाश के उपयोग से पौधे स्वस्थ एवं रोग से लड़ने की क्षमता में बढ़ोतरी होगी। पौध रोग विशेषज्ञ डॉ. बीपी त्रिपाठी ने धान में आने वाली धान में आने वाली प्रमुख बिमारियां जैसे झुलसा, बैक्टिरियल ब्लाइट, गलन के बारे में बताया। भ्रमण के दौरान ग्राम पेण्ड्रीखुर्द, चारभाठा में बैक्टिरियल ब्लाइड की समस्या दिखाई दी। यदि बैक्टिरियल ब्लाइड होगा तो धान की पत्ति ऊपर से नीचे की तरफ वी आकार से सूखना चालू होगा। ऐसी स्थिति में किसान खेत में जल निकासी की उचित व्यवस्था करें और स्ट्रेप्टोसाइक्लीन 6 ग्राम एवं मैन्कोजेब 250 ग्राम प्रति एकड़ की दर से छिड़काव करें। साथ में झुलसा रोग दिखने पर ट्राइसाइक्लोजोल 120 ग्राम दवा प्रति एकड़ का छिड़काव करें। सोयाबीन की फसल में कुछ जगहों पर पत्ती काटने व छेदने वाले कीड़े दिखाई दिए। इसके लिए किसान ट्राइजोफास 300 मिली लीटर प्रति एकड़ की दर से छिड़काव करें। उद्यान वैज्ञानिक प्रमिलाकांत ने किसानों को सब्जियों की नर्सरी का उचित प्रबंधन जैसे बीमारी कीड़े की देखभाल तथा उत्पादन में वृद्धि के संबंधित विस्तृत जानकारी दी।

नवभारत
रविवार, 3 अगस्त 2014
कवर्धा | सहसपुर लोहारा | बोड़ला | पंडरिया

कृषि वैज्ञानिकों ने खेतों का भ्रमण किया

किसानों को फसल की बीमारी का ईलाज बताया

नगर संवाददाता

कवर्धा. कृषि विज्ञान केन्द्र में पदस्थ कृषि वैज्ञानिकों का दल किसानों के खेतों में भ्रमण कर समसामयिक सलाह किसानों को दी. केन्द्र में पदस्थ मृदा वैज्ञानिक एवं कार्यक्रम समन्वयक डॉ.टी.डी.साहू ने किसानों को उचित उर्वरक प्रबंधन एवं पोषक तत्व प्रबंधन के बारे में बताया जैसे कि इस समय लगातार बारिश से धान यदि पीलापन दिखाई दे रहा हो तो जिंक सल्फेट का स्प्रे करें. इसके साथ ही धान में पोटाश का उपयोग करें क्योंकि लगातार बारिश से पौधे कमजोर हो गये हैं पोटाश के उपयोग से पौधे स्वस्थ एवं निरोग रहते हैं. पौधा विशेषज्ञ डॉ.बी.पी. त्रिपाठी ने धान में आने वाली प्रमुख बीमारियां जैसे झुलसा, बैक्टीरियल ब्लाइट तथा गलन के बारे में बताया भ्रमण के दौरान ग्राम पेंडी खुर्द, चारभाठा में बैक्टीरियल ब्लाइड की समस्या दिखाई दी यदि बैक्टीरियल ब्लाइड होगा तो धान की पत्ती ऊपर से नीचे की तरफ वी

फसल का अवलोकन करते कृषि वैज्ञानिक

आकार सूखना चालू होगी ऐसी स्थिति में किसान भाई खेत में जल निकास उचित व्यवस्था करें और स्ट्रेप्टोसाइक्लीन 6 ग्राम एवं मैंकोजेब 250 ग्राम प्रति एकड़ की दर से छिड़काव करें. साथ में झुलसा रोग दिखने पर ट्राईसाइक्लोजोल 120 ग्राम दवा प्रति एकड़ का छिड़काव करें सोयाबीन की फसल में कुछ जगहों पर पत्ती काटने एवं छेदने वाले कीड़े दिखाई दिये इसके लिये किसान ट्राइजोफास 300 मि.ली. प्रति एकड़ की दर से छिड़काव करें उद्यान वैज्ञानिक प्रमिला कांत ने किसानों को सब्जियों की नर्सरी का उचित प्रबंधन जैसे बीमारी कीड़े की देखभाल के बारे में बताया प्रक्षेत्र प्रबंधक बी. एस. परिहार ने किसानों को सोयाबीन फसल की देखभाल जैसे उचित जल निकास उर्वरक प्रबंधन के बारे में बताया.

किसानों को दी जा रही जानकारी

बीज उपचार पर बल दे

नगर संवाददाता

कवर्धा. कृषि विज्ञान केन्द्र में पदस्थ पौध रोग विशेषज्ञ डॉ.बी.पी. त्रिपाठी ने बताया कि खरीफ में जिले में सोयाबीन और धान की खेती बहुतायत की जाती है, जिसमें धान में झुलसा, शीथ ब्लाइट, शीथ राट, कंडुआ आदि प्रमुख बीमारी एवं सोयाबीन में चारकोल राट, सोयाबीन ब्लाइट आदि बीमारियों के कारण किसानों को सही उत्पादन नहीं मिलता साथ में बहुत सारी कृषि दवाइयों का उपयोग करना पड़ता है. अतः किसान भाइयों को समन्वित रोग प्रबंधन के बिंदुओं को जोर देना चाहिए जैसे कि किसान भाई अभी गर्मी में गहरी जुताई जरूर करें, जिससे रोग परजीवी की संख्या कम होगी अच्छे किस्म के बीजों का चयन करें. साथ में बीजोपचार आवश्यक रूप से करें जिस प्रकार बच्चे पूरे उम्र स्वस्थ रहने के लिए टीकाकरण जरूरी है उसी प्रकार फसल को बुआई के पूर्व बीज उपचार करना उतना ही महत्वपूर्ण है. बीज उपचार करने के लिए बाजार में उपस्थित फफूंदीनाशक जैसे कार्बेन्डाजीम + मैन्कोजेब 3 ग्राम प्रति किलो बीज की दर से उपचारित करें अथवा ट्राइसाइक्लोजोल 2 ग्राम/किलो बीज से उपचारित करें जिससे बीज जनित बिमारियां आने की संभावनायें कम हो जाती है. धान की रोपा पद्धति के लिए थरहा (नर्सरी) लगाने के पूर्व बीज उपचार करें. इसके साथ साथ खेत की साफ सफाई करें. धान अथवा दलहनी फसलें जैसे अरहर, उड़द, तिलहनी फसलें, सोयाबीन एवं मूंगफली इन सभी फसलों में बीज उपचार अवश्य करें. और फसलों को बुआई के पूर्व बीज उपचार से बीज जनित बीमारियां आने की संभावनायें कम रहती है. बीज उपचार में खर्चा कम आता है अतः बाद में लगने वाले अधिकाधिक दवा खर्चों को कम किया जा सकता है जो किसान भाई नर्सरी लगा दिये है यदि उसमें झुलसा रोग के लक्षण दिखाई दे रहे है तो ट्राइसाइक्लोजोल दवा 0.1 ग्राम प्रति लीटर पानी की दर से छिड़काव करें.

खेतों में दवाई डालने की दी गई सलाह

वैज्ञानिकों ने लिया फसलों का जायजा

कार्यालय संवाददाता @ कवर्धा
bureau@patrika.com

कृषि विज्ञान केन्द्र के वैज्ञानिकों के दल ने विकासखण्ड बोड़ला और सहसपुर लोहारा के विभिन्न गांवों में भ्रमण कर किसानों को समसामयिक सलाह दी।

बोड़ला विकासखंड के ग्राम मादीभाट में प्रक्षेत्र भ्रमण किया गया, जहां अरहर, सोयाबीन में खरपतवार की समस्या दिखाई दी। इसके लिए वैज्ञानिकों ने ईमेजाथाइपर एमेजामाक्स 40 ग्राम प्रति एकड़ की दर से छिड़काव का सुझाव दिया। ग्राम बोड़ला में कुछ किसानों खेत में उर्वरक और सूक्ष्म तत्व की कमी दिखाई दी, जिसके लिए मृदा वैज्ञानिक डॉ. टीडी साहू ने किसानों को उचित उर्वरक प्रबंधन और सूक्ष्म तत्व प्रबंधन की जानकारी दी। पौध रोग विशेषज्ञ डॉ. बीपी त्रिपाठी ने कुछ खेतों में बैक्टिरियल ब्लाईट के लक्षण जिसमें धान की पत्ती के ऊपर से नीचे की तरफ सूख रही है। इसके लिए उन्होंने स्ट्रेप्टोसाइक्लीन 6 ग्राम मैन्कोजेब 500 ग्राम दवा को प्रति एकड़ की दर से छिड़काव करने सुझाव दिए। ग्राम डोंगिया कला के खेतों में उर्वरक की कमी के कारण पीलापन दिखाई दिया, जिसके लिए मृदा वैज्ञानिक द्वारा सूक्ष्म तत्व और उर्वरक प्रबंधन की जानकारी दी गई। ग्राम छीरपानी में कहीं-कहीं सोयाबीन की फसल में पत्ती छेदक कीटें दिखाई दिए, जिसके लिए ट्राइजोफास जैसी दवाईयों के उपयोग और खेत की साफ सफाई रखने की सलाह दी गई।

APRIL 2014 TO MARCH 2015

नवभारत

रायपुर, मंगलवार, 9 सितम्बर 2014

कीट व्याधि रोकने टीम गठित

[illegible]

कवर्धा | हरिभूमि

रायपुर, शनिवार, 09 अगस्त 2014

कृषि वैज्ञानिकों ने किसानो को दी सलाह

कवर्धा। कृषि विज्ञान केन्द्र कवर्धा के वैज्ञानिकों के दल ने विकासखण्ड बोड़ला एवं सहसपुर लोहारा के विभिन्न गांवों में भ्रमण कर किसानों को सामसामयिक सलाह दी। 4 अगस्त को बोड़ला विकासखण्ड में कार्यक्रम समन्वयक डॉ. टीडी साहू, डॉ. बीपी त्रिपाठी, बीएस परिहार, प्रक्षेत्र प्रबंधक एवं ग्रामीण कृषि विस्तार अधिकारी ब्रजमोहन चंद्रवंशी द्वारा ग्राम मोंदीभाट में प्रक्षेत्र भ्रमण किया। जिसमें अरहर, सोयाबीन में खरपतवार की समस्या दिखाई दी। इसके लिए वैज्ञानिकों ने ईमेजाथाइपर और एमेजामाक्स 40 ग्राम प्रति एकड़ की दर से छिड़काव का सुझाव दिया। ग्राम बोड़ला में कुछ किसानों ने खेत में उर्वरक एवं सूक्ष्म तत्व की कमी दिखाई दी। जिसके लिए मृदा वैज्ञानिक डॉ. टीडी साहू ने किसानों को उचित उर्वरक प्रबंधन एवं सूक्ष्म तत्व प्रबंधन के बारे में किसानों को जानकारी दी। पौध रोग विशेषज्ञ डॉ. बीपी त्रिपाठी ने कुछ खेतों में बैक्टिरियल ब्लाईट के लक्षण जिसमें धान की पत्ती के ऊपर से नीचे की तरफ सूख रह रही है।

मासिक कार्यशाला का आयोजन

किसानों को रोग नियंत्रण की जानकारी दी गई

कवर्धा. कृषि विज्ञान केन्द्र द्वारा 12 अगस्त को मासिक कार्यशाला का आयोजन किया गया, जिसमें जिले के चारों विकासखण्ड के वरिष्ठ कृषि विस्तार अधिकारी, कृषि विकास अधिकारी एवं कृषि विज्ञान केन्द्र के समस्त कृषि वैज्ञानिक द्वारा जिले क गत माह में कृषि से संबंधित जानकारी पर विस्तृत रूप से चर्चा हुआ. कृषि विज्ञान केन्द्र में पदस्थ पौध रोग विशेषज्ञ डॉ.बी.पी. त्रिपाठी ने धाने में लगने वाले प्रमुख बिमारियों झुलसा, बैक्टीरियल ब्लाइड, शीथ ब्लाइड, शीथ राट, एवं सोयाबीन की प्रमुख बिमारियों बैक्टीरियल पास्थूल, लीफ ब्लाइट, सोयाबीन रस्ट, अरहर की प्रमुख बिमारी उकठा आदि पर विस्तृत चर्चा एवं समन्वित रोकथाम के उपाय के बारे में बताया. केन्द्र में पदस्थ उद्यानिक वैज्ञानिक श्रीमति प्रमिला कांत ने खरीफ, रबी एवं जायद मौसम में उगाए जाने वाली सब्जियों के उत्पादन तकनीक के बारे में विस्तृत जानकारी दी. वैज्ञानिक डॉ. नूतन रामटेके द्वारा चूहों के नियंत्रण पर जानकारी दी गयी इसमें उपस्थित सभी कृषि अधिकारियों एवं वैज्ञानिकों द्वारा अगस्त माह में आने वाले प्रमुख कृषि कार्य पर विस्तृत चर्चा किया गया, जिससे किसानों को कम लागत में ज्यादा उत्पादन मिल सकें.

बढ़ी किसानों की चिंता

पौधों का तना खाकर बर्बाद कर देता है पूरी फसल

जिले के 12 हजार 914 हेक्टेयर खरीफ फसल तनाछेदक की चपेट में

फसलों पर बोरर का हमला

[illegible]

[illegible]

मुरझाने लगते हैं पौधे

[illegible]

सोयाबीन भी चपेट में

[illegible]

असमंजस में किसान

[illegible]

फसलों में कीट व्याधि

फसल का नाम	कीटव्याधि	प्रभावित रकबा
धान	तनाछेदक	[illegible]
—	ब्लास्ट	2267 हेक्टेयर
—	बीएलबी	[illegible] हेक्टेयर
—	[illegible]	350 हेक्टेयर
—	[illegible]	10 हेक्टेयर
सोयाबीन	इल्ली	1525 हेक्टेयर
—	[illegible]	2389 हेक्टेयर

विकासखंडों में धान की फसल

विकासखंड	बोआई रकबा
कवर्धा	20.47 हेक्टेयर
बोड़ला	20.30 हेक्टेयर
पंडरिया	21.96 हेक्टेयर
सहसपुर लोहारा	20.53 हेक्टेयर

सलाह दी जा रही

[illegible]

एक्सपर्ट व्यू

सावधानी बरतें

[illegible]